विजेता जागो-पुरुषों का प्रार्थना कैलेंडर जुलाई 2023

1. दृढ़ विश्वास - "प्रिय प्रभु, मेरी सोच को दृष्टि से चलने से लेकर विश्वास से चलने तक बदल दें। अब जब कि मसीह मुझ में रहता है, मेरे पास परमेश्वर को देखने के लिए आवश्यक आत्मिक आंखें हैं। इसलिए मुझे दिखाओ कि आप सभी चीजों में काम कर रहे हो। फिर, मेरी भलाई और आपकी महिमा के लिए सभी चीजों को एक साथ करने के लिए आप पर भरोसा करके मुझे कठोरता सहने में सक्षम करें। (इब्र 11:27)

2. उसकी सेवा में- "प्रिय प्रभु, मैंने सोचा था कि अब तक मैं आपकी सेवा कर रहा था, लेकिन अब मैं देखता हूं कि मेरे शारीरिक प्रयास केवल मृत कार्यों का उत्पादन कर रहे थे। हे प्रभु, मुझे यह दिखाने के लिए धन्यवाद कि मैं आपका हूं और आप मुझमें हैं। मैं ख़ुशी-ख़ुशी अपने आप को आपके लिए उपलब्ध करता हूँ, ताकि आप मेरे द्वारा अपने अच्छे कार्यों को पूरा कर सकें।" प्रेरितों 27:23

3. प्रभु की उपस्थिति - "प्रिय प्रभु यीशु, मैंने एक बार सोचा था कि जब चीजें खराब हो जाती हैं तो मुझे केवल आपकी आवश्यकता होती है। लेकिन अब जब आपकी उपस्थिति मुझमें वास करती है, तो मुझे एहसास होता है कि मुझे हर चीज़ के लिए आप पर निर्भर रहना चाहिए। एक अटूट बंधन में अपने आप को मेरे साथ जोड़ने के लिए धन्यवाद ताकि आपकी उपस्थिति स्थायी रूप से मुझमें निवास करे। (निर्ग. 33:15)

4. परमेश्वर की सुरक्षा- "हे परमेश्वर, कभी-कभी ऐसा लगता है कि हर कोई मेरे खिलाफ है। लेकिन मुझे पता है कि कोई भी वास्तव में मुझे कुचल नहीं सकता क्योंकि आप मेरे लिए हो! आपकी उपस्थिति की महान सामर्थ मेरी रक्षा करने के लिए मेरे भीतर है। मुझे अपना ध्यान मेरे चारों ओर के शत्रुओं के बजाय अपने निवास स्थान की उपस्थिति पर केंद्रित करने की अनुमति दें।" (भजन 9:3)

5. जीवन जीवितों के लिए है- "प्रभु यीशु, मैं आभारी हूँ कि जब मैंने आपको अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया, तो आप मुझमें वास करने आए। आप, जीवन के प्रभु, अब मेरा जीवन बन गए हैं। इसलिए, मैं अपना जीवन आपको सौंपता हूं कि आप मेरे द्वारा अपना जीवन व्यतीत करें। मैं प्रार्थना करता हूं कि आप मेरे साथ अपने अनुसार कार्य करें और अपने आप को मेरे द्वारा प्रकट करें!" (गला 2:20)

6. चिंता –"मैं तुमसे कहता हूं कि अपने जीवन के बारे में चिंता मत करो ..." (मत्ती 6:25)। यीशु के एक शिष्य को चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। उसका जीवन उसके हाथों में सुरक्षित है जो ब्रह्मांड पर शासन करता है और उसकी सभी जरूरतों को पूरा करेगा। चिंता को ना कहें! चाहे जो हो जाये परमेश्वर से उसकी आत्मा की अगुवाई को पहचानने और उसके निर्देशों का पालन करने के लिए बुद्धि मांगे।

7. परीक्षा -"तुम पर कोई ऐसी परीक्षा नहीं हुई, जो मनुष्य में सामान्य है; और परमेश्वर सच्चा है, जो तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा..." (1कुरि 10:13क)। हम पतित संसार में रहते हैं और प्रलोभनों के अधीन हैं। लेकिन आप हमेशा जीवन के तूफानों के मध्य प्रभु पर भरोसा कर सकते हैं। वह आपकी प्रार्थना सुनता है।

8. परमेश्वर विश्वासयोग्य है- "...परन्तु परीक्षा के साथ (परमेश्वर) बचने का मार्ग भी देगा, जिस से तुम सह सको" (1कुरिन्थियों 10:13बी)। जब अंधेरे का राजकुमार आपके विश्वास को बुझाना चाहता है तो अविश्वास और भय वाले उग्र तीरों को फेंकता है, यहोवा और उसके वचन से लिपटे रहो। वह आपको आशीष देना चाहता है और आपको बाहर निकालेगा।

9. नाराज़गी –"प्यार गलत पीड़ा को ध्यान में नहीं रखता" (1कुरि 13:5बी)। नाराजगी कड़वाहट की ओर ले जाती है और रिश्तों में जहर भर देती है। पुरुषों, प्रभु को अपने प्रेम को आपके माध्यम से उँडेलने दें और क्षमा करना सीखें क्योंकि इससे पहले कि आप कड़वाहट की गिरफ्त में जाते या आप अपने उद्धार का आनंद खो देते, उसने आपको क्षमा कर दिया है।

10. टालमटोल-"इसलिये ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो : निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो। अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं।" (इफि 5:15.16)। अत्यावश्यक में फस कर, महत्वपूर्ण को न खो दें। परमेश्वर की मदद से आप अपने दिनों को व्यवस्थित कर सकते हैं, प्रभु को सुनने के लिए समय निकाल सकते हैं, और फिर आप जो कुछ भी करते हैं उसमें उसका सम्मान कर सकते हैं।

11. अकेलापन-सामाजिक मीडिया और हमारी तेज़-तर्रार जीवनशैली के बावजूद अधिकांश युवा वयस्क आज अकेलापन महसूस करते हैं। वास्तव में, यह दुनिया जो कुछ भी पेश कर सकती है वह "ईश्वर-आकार के छेद" को भरने के लिए पर्याप्त नहीं है जो हर किसी के दिल में है। यीशु को आज ही अपना केंद्र बनने दें। "क्योंकि उसने आप ही कहा है, कि मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी त्यागूंगा" (इब्रानियों 13:5)।

12. ईर्ष्या –जब हम परमेश्वर के प्रेम को अपने हृदय में भरने की अनुमति देते हैं, तो हमने सबसे कीमती उपहार को चुन लिया है। वह हमें हमारी परिस्थितियों के बावजूद संतोष की आशीष देगा। शिकायतकर्ता मत बनो, न ही ईर्ष्या को आश्रय दो। यह केवल आपको और आपके परिवार को बर्बाद कर देगा। "एक स्वस्थ हृदय शरीर के लिए जीवन है, परन्तु ईर्ष्या हड्डियों के सड़ने का कारण है" (नीतिवचन 14:30)।

13. अपराध बोध- "इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे" (यूहन्ना 8:36)। हम सब परमेश्वर के सामने दोषी हैं और अक्सर दूसरों के प्रति दोषी हो जाते हैं। क्रूस पर मसीह के छुटकारे के कार्य में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की क्षमा के लिए उसकी स्तुति करो। अपने दोषियों को क्षमा करने और यदि आप दोषी हैं तो जल्द से जल्द सुलह करने के लिए प्रभु से मदद मांगें।

14. भय– “प्रभु मेरी तरफ है; मैं नहीं डरूंगा। मनुष्य मेरे साथ क्या कर सकता है?" (Ps 118:6) आपकी जो भी परेशानी हो, चाहे वह युद्ध हो या उत्पीड़न, चाहे वह आपकी नौकरी की हानि हो या गरीबी और भूख, चाहे वह बीमारी हो या मृत्यु, - यदि आपने यीशु में अपना विश्वास रखा है, तो वह आपको देखेगा . "जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह सुरक्षित रहेगा" (नीतिवचन 29:25)।

15. असफलता – “जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है; क्योंकि वह जानता है कि हम कैसे बनते हैं, उसे स्मरण रहता है कि हम मिट्टी ही हैं” (भजन 103:13.14) प्रभु को अपना ध्यान केंद्रित करने की अनुमति दें। अपनी असफलताओं पर ध्यान देना बंद करें; विश्वास करो कि वह तुमसे प्यार करता है! उनका अनुग्रह काफी है।

16. संदेह - "धन्य वे हैं जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया" (यूहन्ना 20:29बी)। प्रभु की स्तुति करो कि वह एक दयालु परमेश्वर है जो हमारे पास आता है जब हम दिल में टूट जाते हैं और आत्मा में पछताते हैं। वह आपके सच्चे सन्देहों का उत्तर देना चाहता है। "यहोवा का नाम दृढ़ गढ़ है, धर्मी उस में प्रवेश करके सुरक्षित रहते हैं" (नीतिवचन 18:10)।

17. निराशा- “पृथ्वी के छोर से मैं तेरी दुहाई दूंगा, जब मेरा हृदय व्याकुल हो जाएगा; मुझे उस चट्टान पर ले चलो जो मुझ से ऊंची है” (भजन 61:2)। जब आपने अपना सर्वश्रेष्ठ कर दिया है और यह अभी भी काफी दूर है, तो हार मत मानिए। इसके बजाय प्रभु से उसका दृष्टिकोण पूछें। यदि आप पहले उससे प्रेम करते हैं तो वह सब बातों में भलाई को उत्पन्न करता है।

18. क्रोध– "क्रोध तो करो, पर पाप मत करो; सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे" (इफिसियों 4:26)। एक धर्मी क्रोध भी है। परमेश्वर स्वयं प्रतिदिन दुष्टों पर क्रोधित होता है (भजन 7:11)। लेकिन वह पवित्र है और हम नहीं। क्रोध को उग्र न होने दें। यदि आप गर्म स्वभाव के हैं और आसानी से क्रोधित हो जाते हैं, तो प्रभु से कहें कि वह आपको दिल की सच्ची नम्रता सिखाए।

19. प्रेम- परमेश्वर उन लोगों से बहुत प्रेम करता है जिन्होंने अभी तक यीशु के बारे में नहीं सुना है। प्रार्थना करें कि आप परमेश्वर के प्रेम का एक पात्र बनने में सफल हों, और उसे ऐसे बहुत से लोगों से संपर्क करने में मदद करें जिन्होंने अभी तक आपके माध्यम से नहीं सुना है। (याकूब 4:5)

20. चिंता - पृथ्वी पर मसीह के राजदूत के रूप में, आपको उन लोगों के साथ सुसमाचार साझा करने के लिए नियुक्त किया गया है जिन्होंने अभी तक इसको नहीं सुना है। प्रार्थना करें कि परमेश्वर खोई हुई दुनिया के लिए अपनी चिंता से आप को बोझ दे; और आपको दिखाये कि कहाँ और कैसे वह आपको सबसे उपयोगी तरीके से उपयोग कर सकता है। (मत्ती 28:18-20)

21. सहभागिता - जैसे चूल्हे में लकड़ी के टुकड़े आग को जलाए रखते हैं, वैसे ही हमें एक दूसरे को मसीह के अनुयायी होने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। प्रार्थना करें कि आप साथी विश्वासियों का सहारा लें। और प्रार्थना करें कि परमेश्वर अन्य मसीहियों को आशीष और प्रोत्साहन देने के लिए आपका उपयोग करे। (इब्र 13:1)

22. अवसर - कुछ लोग दिन के अंत से पहले किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने के अवसर के लिए हर सुबह प्रार्थना करते हैं ताकि वे प्रभु की उपस्थिति में उसको आमंत्रित कर सकें। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह ऐसे परिश्रमी सुसमाचार प्रचारकों को तैयार करता है (कुलुस्सियों 4:2-3)।

23. पुनर्स्थापना- "वह मेरे जी में जी लेता है..." (भजन 23:3अ)। जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के लिए समय निकालते हैं और उसके लिए अपना हृदय और जीवन खोलते हैं, तो हम राहत का अनुभव करते हैं। सर्वशक्तिमान चाहता है कि हम उसके करीब रहें, क्योंकि वह हमें आशीष देकर प्रसन्न होता है। आज पुनर्स्थापित होने के लिए तैयार रहें।

24. मार्गदर्शन - "धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है" (भजन 23:3बी)। पीछे मुड़ कर देखने पर हम केवल आश्चर्य कर सकते हैं कि जब भी हमने उसे खोजा तो परमेश्वर ने हर बार हमारी अगुवाई कैसे की; और कैसे हमारी आत्मा तरोताजा हो गई। आज फिर से उस पर भरोसा करने के लिए तैयार रहें!

25. निडर - "चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूँ, तौभी हानि से न डरूँगा; क्योंकि तू मेरे साथ रहता है " (भजन 23:4अ)। भले ही मेरा जीवन कठिन हो, बीमारी, दर्द, पीड़ा और मृत्यु के खतरे से भरा हो, मैं जानता हूं कि प्रभु यीशु मेरे साथ हैं और मेरी अगुवाई करते हैं।

26. आराम- "तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है" (भजन 23:4ख)। यीशु मसीह में सुरक्षित होना कितना अवर्णनीय आनंद है। हम उन क्षणों और परिस्थितियों को जानते हैं जो जीवन को उजाड़ और निराशाजनक बनाते हैं। लेकिन जैसे ही हम यीशु को अपने अंदर आने की अनुमति देते हैं, हमारी आत्मा को प्रोत्साहन मिलता है और हम नई शक्ति और आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं।

27. भलाई - "निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी" (भजन 23; 6) मेरे लिए परमेश्वर की भलाई के कारण, वह मुझे इस भलाई को मेरे परिवार और उन लोगों तक पहुँचाने में सक्षम

बनाता है जिनके साथ मैं संपर्क में आता हूँ। इस प्रकार परमेश्वर की उपस्थिति और अनुग्रह आपके जीवन में भी प्रतिबिम्बित होना चाहता है।

28. प्रकाश जो चमकता है -अंधेरे के राजकुमार को पता है कि उसका समय कम है। उसकी रणनीति दुनिया को अनैतिकता, विद्रोह, आध्यात्मिक मतभेद और अराजकता में उलझाने की है। इसलिए समय का सदुपयोग करें..."उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने ऐसा चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें" (मत्ती 5:16)।

29. पीछे मत हटो – "पर मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, और यदि वह पीछे हट जाए तो मेरा मन उस से प्रसन्न न होगा।" (इब्रानियों 10:38)। जब अधर्म बढ़ जाएगा, तो मसीह और उसके सुसमाचार का विरोध किया जाएगा। हिम्मत रखो! अपनी बात पर दृढ़ रहना! उन से मत डरना जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्माओं को घात नहीं कर सकते" (मत्ती 10:28)।

30. प्रार्थना - "निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो" (1थिस्लू 5:17)। प्रतिदिन जीवन की दिनचर्या; परिवार। परिस्थितियाँ; काम इत्यादि मनुष्य को प्रार्थना की उपेक्षा करने की ओर ले जा सकते हैं। प्रार्थना मनुष्य के सामने आने वाली लड़ाइयों का सामना करने के लिए मन और हृदय को सतर्क और संवेदनशील बनाए रखती है। प्रभु, आज हम एक दृढ़ और निरंतर प्रार्थना जीवन की याचना करते हैं।

31. विश्वासयोग्यता - प्रलोभन या परीक्षाएं हर जगह मौजूद हैं, और जो मनुष्य के यौन और नैतिक जीवन से जुड़े हैं, वे स्पष्ट रूप से सामने आ गए हैं। फ़िलि 4:7 कहता है कि "... परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।" प्रभु, मेरे दिल और दिमाग को निर्देशित करने में मेरी मदद करें कि मैं हमेशा अपनी पत्नी के प्रति वफादार रहूं!